JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कृष्ण भक्ति काव्य सम्बन्धित चित्रों का सौन्दर्यात्मक विवेचन

नीतू सिंह
(शोध छात्रा)
ललित कला विभाग
काशी नरेश राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
ज्ञानपुर, भदोही

सौन्दर्य निहित अह्लाद्कारिता सौन्दर्य का आवश्यक तत्व है। सौन्दर्य का आकर्षण इस तत्व की उपस्थिति में ही प्रकट होता है। जिसे सामान्यतः लालित्य या चारुता भी कहा जाता है। सौन्दर्य में जो चित्त को आकर्षित करने की सहज प्रवृत्ति होती वह उसके लालित्य गुण के कारण ही होती है। सम समानुपातों में आवश्यक तत्वों के समन्वय करने पर भी किसी चित्र को तब तक सौन्दर्य युक्त नहीं कहा जा सकता है। जब तक उसमें लालित्य और औदात्यतता समन्वित न की गई हो। रमणीयता चित्र के आकर्षण के लिए सम्मोहन का कार्य करती है। अर्थात् रमणीयता चित्र का प्राण तत्त्व है। जिसे हम लालित्य भी कह सकते है जब चित्र को 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की अवधारणा के अनुसार स्पृहणीय बनाया जाता है। तब यहाँ सत्य को शिव और सुन्दर को प्रिय के अर्थ में ग्रहित किया जाता है। अर्थात् जो मनोरम हो मनुष्य की आकर्षक वृत्तियों को परम सुन्दर एवं रमणीय होने पर अह्लाद का गुण उत्पन्न होता है। यह अह्लाद् श्रीकृष्ण का गुण है। लालित्य और रमणीयता उन अवतारी श्रीकृष्ण से प्रकट होती है। वे उनसे रस सिक्त होती हैं और मधुर रूप में प्रकट होती है। इस माधुर्य की अनुभूति कृष्ण भक्ति की सौन्दर्य साधना में प्रारम्भ से इति तक है। यह कहना और सुनना जितना सहज और सरल लगता है उतना उसको अभिव्यक्त करना रहस्यात्मक है। सूरदास[1] जैसे महान कवि रासलीला का वर्णन करने के संदर्भ में कहते है[2] कि यह वर्णन करना उनके शक्ति के परे है। एकमात्र आराध्य श्रीकृष्ण–राधा तथा श्रीगुरु के कृपा के बिना वे उस परम रमणीय स्थिति का वर्णन कर पाने में सफल नहीं हो सकते थे। यह उनकी कृपा का अनुपम् प्रभाव है कि भजन के प्रताप तथा चरण महिमा के सौन्दर्य को वे भी मधुरता के साथ वर्णित कर पायें। क्योंकि यह सामान्य स्तर से वर्णित किये जाने वाले तत्त्व नहीं है। जब चित्त बुद्धि और अनुभूति के सामान्य स्तरों को छोड़कर चेतना के लोक में विचरण करती है, तब इस घनश्याम द्युति को मधुरता एवं लावण्यता के कुछ दर्शन होते है। सरस घन अमृत में जब मन पूर्णतः डूब जाता है, तब उस माधुर्य सिन्धु में मन कुछ समय के लिए लीन हो पाता है। ऐसी अवस्था में जिस काव्य अथवा चित्र का उदय होता है, वह रमणीय व लावण्यता युक्त होता है। बिना रमणीयता एवं

1 मैं कैसे रस रसहिं गाऊँ, में राधिका स्यामा की प्यारी, कृपा बास, ब्रज पाऊँ। 'सूरसागर,' सूरदास जी, पद संख्या – 1792

2 रासलीला सम्बन्धित चित्र

अह्लाद के सौन्दर्य के बोध मात्र से लालित्य के गुण कृति में प्रकट नहीं होता है। जब सौन्दर्य आनन्द रस से सिक्त होता है। तो उसमें प्रकट होने वाली रमणीयता स्फुट रूप में रूपान्तरित होकर सहज दर्शक एवं पाठक में संचरित हो जाती है।[3]

सौन्दर्य की पूर्णतः के लिए भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का आवश्यक तत्त्व जिसे उद्दात नाम से जानते है। उसकी अह्लाद्कारिता के लिए धरातल का वर्णन करना पड़ता है जो हमारे व्यक्तिगत उपादानों से ऊपर होता है। सौन्दर्य का बोध सामान्य प्रफुल्लित करने वाली अवधारणा नहीं है, बल्कि यह एक आन्तरिक अवधारणा है। चेतना के विकास के स्तर पर सौन्दर्य बोध का जीवन में कोई विशेष सार्थकता तभी होगी जब उससे अह्लाद् का प्रस्फुटन होगा। इस स्तर पर औदात्य के गुणों को अपनी कल्पना में अवश्यक रुप से समाहित किया जाना चाहिए। किसी ऐसे तत्त्व की उपस्थिति से हम अभिभूत नहीं हो सकते है जो केवल मनमानी कल्पना हो। उसमें विशालता उच्चता गरिमा जैसे तत्त्व जब समाहित होते है तो वे हमारे मस्तिष्क को संतुष्टि प्रदान करते हैं किसी चित्र की विशालता चकित करने वाले अह्लाद् को जन्म देती है और यह अह्लाद् हमें उस विशालता के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करता है। यह समर्पण हमारे व्यक्तिव का ह्रास नहीं है बल्कि उस चित्र की महत्ता को गृहित करने का उद्दात्त गुण है।[4] इस आत्मसमर्पण से हमारे अन्दर एक सौन्दर्य जागृति होता है जो हमें उस चित्र की उद्दात्ता और गरिमा का बोध कराता है। उद्दात्ता वह गुण है जो हमें उस चित्र से बाँधता है जो सामान्य मनोरंजन से ऊपर उठकर हमें आत्मसंतुष्टि प्रदान करता है और यही रस की अभिव्यंजना है। इस उद्दात्ता को सौन्दर्य के सन्दर्भ में इस प्रकार व्याख्यायित करने के पीछे हमारा उद्देश्य यह है कि हम मध्यकालीन लघुचित्रों की परम्परा की विशालता उच्चता और गरिमा को न सिर्फ आत्मसात कर सके बल्कि उसके उद्दात्त गुणों के कारण उस विषय में अपना समर्पण भी कर सके। सौन्दर्य का ऐसा सन्तुलन जो सामान्य स्थिति के बाधित होने के अनन्तर किसी विशाल सत्य पर पहुँचकर विशाल चेतना से अपनी अनुकूलता स्थापित कर लेता है। इसलिए यह सामान्य सौन्दर्य नहीं चेतना के स्तर पर यह उद्दत्ता सौन्दर्य को श्रेष्ठ गुणों से युक्त करता है। जब हम किसी कृति का निर्माण एक सीमित उद्देश्य के लिए करते है तो साधारण चेतना होने के कारण जड़ता उत्पन्न करती है। इसीलिए जब चित्र सामान्य भूमि पर बनाये जाते है। जिनके विषय अत्यन्त सामान्य होते है तो चेतना को वे सामान्य रुप से संतुष्ट करते है और उनका प्रभाव सीमित होता है, लेकिन जब प्रभाव व्यापक होता है और चेतना किसी उद्दात्त विषय को ग्रहीत करती है तो वह उच्चतर होने कारण सामान्य से हटकर होती है। वह समाज पर व्यापक प्रभाव छोड़ती है। विभिन्न उद्दात्त काव्यों पर जो कृष्ण आधारित चित्र बनाये गये है। वे विशिष्ट होने के साथ–साथ रहस्यात्मक भी है। उनके विषय इतने प्रभावी है कि उसकी स्पष्ट छाप जन–जन पर दिखायी देती है। वे गतिशील से लगते है और चिर नवीन होने के साथ–साथ प्रासंगिक है।

3 स्वाामी बिल्बमंगल 'श्री कृष्ण कर्णामृत,' श्लोक 53
4 आनन्द मुल्कराज, द 'हिन्दू व्यू ऑफ आर्ट' पृष्ठ संख्या 95

रमणीयता से सौन्दर्य का जब प्रस्फुटन होता है तब वहाँ उन्मुक्त होने और विविध रूप को अवतरित करने का अवसर होता है। रमणीमता जहाँ गतिशीलता पैदा करती तब वही उद्‌दात्ता अपने में बाँधती है। स्थिरता का बोध कराती है अर्थात् एक चित्र में गति और स्थिरता दोनों दिखायी देती है। अपनी उद्‌दात्ता के कारण ऐसे चित्र चल और अचल ब्रह्म की भाँति एक ही समय में गति और स्थिरता को अपने में समाहित करता है। रमणीयता एवं उद्‌दत्ता का यह सम्मिलन चित्र को सबल बनाता है और उसमें एक आकर्षण को जन्म देता है। रमणीयता और उद्‌दत्ता के अभिन्नतापूर्ण सौन्दर्य की सृष्टि करता है। इससे चित्र में जो आकर्षण आता है। वह चित्र को गौरवपूर्ण मोहक और स्पृहणीय बनाता है। इन दोनों के मणिकांचनसंयोग से दर्शक को चित्र में वास्तविक सौन्दर्य का बोध होता है। इसमें प्रेमपूर्ण शास्त्रीय भाव से युक्त दिखायी देता है। इन चित्रों की संयोजन, व्यवस्था, माध्यम, सहयोग, सामंजस्य, प्रभाविता, दर्शनीय है। इन चित्रों की विश्वजनीनतापूर्ण सत्य का बोध कराती है। बहुत सूक्ष्म ढंग से कलात्मक गुणों को अवेष्टित करने के कारण यह असाधारण दिखायी देती है। इन चित्रों में आत्मसंयम और आत्मस्वच्छन्दता का सम्मिलन है। चित्रकार संयमी जागरुक स्वच्छंद होते हुए भी विषय के प्रति समर्पित दिखायी देता है। आराध्य कृष्ण के चित्रण में लालित्य तथा रमणीय तत्त्व को चटक रंगों में चित्रित किया गया है। बहुत सावधानी से देखने पर चित्रकारों का भक्तिभाव सौन्दर्य और रस में समाहित दिखायी देता है। निजी अनूभूति के धरातल पर चित्रकारों ने भक्तिभाव गर्भित दृष्टि से इस विषय में प्रवेश किया जो कवियो तथा रीतिकालीन कृष्णभक्त कवियों के सौन्दर्य दृष्टि के अनुकूल दिखायी देता है। यहाँ पर यह कह देना अनिवार्य लगता है कि जो चित्र जयदेव के "गीत–गोबिन्द" पर आधारित होकर बनाये गये है जो 12–13 शताब्दी का ग्रंथ है। वे सामान्य सौन्दर्य बोध से अलग हटकर श्रीराधा–कृष्ण के रहस्यवादी प्रेम को प्रकट करते है। चित्रकारों ने इस रचना पर श्रृंखलाबद्ध रूप से चित्रित किया है। भक्तिकालीन कृष्ण काव्य के उद्‌दात्ता को रमणीय बनाकर जटिल सौन्दर्य बोध के बजाय लालित्य युक्त सौन्दर्य का अवतरण किया गया है। रागमाला चित्रण तथा बारहमासा चित्रण में श्रीराधा जी के साथ–साथ बृजवासी गोपीयों का चित्रण भी किया गया है। जिनके चित्र संयोग और वियोग श्रृंगार पर आधारित रचनाओं को अपने कौशल से बारहमासा वर्णन में विशेष ऋतुओं के प्रभाव के आधार पर चित्रित किया गया है। बारहमासा वर्णन में चित्रकारों ने कवियों द्वारा वर्णित श्रीराधा जी और गोपियों पर पड़ने वाले विविध ऋतुओं के अनुसार बारह महीनों में पड़ने वाले संयोग एवं वियोग के विभिन्न प्रभावों को चित्रित किया गया है।[5]

जिस विषय को विशेष रूप में समाहित किया गया है उनमें माखन चोरी लीला,[6] चीरहरण लीला, रासलीला के विविध दृश्य, पनघटलीला,[7] व्याहलीला, दान लीला, बसंतलीला, निकुंजलीला[8] असुरों के वध सम्बन्धितलीला, कालियानाग वध लीला,[9] गोवर्द्धनलीला, सारथी कृष्णलीला,[10] श्रीमद

5 बारहमासा सम्बन्धित चित्र
6 माखन चोरी लीला सम्बन्धित चित्र
7 पनघटलीला सम्बन्धित चित्र
8 निकुंजलीला सम्बन्धित चित्र
9 कालियानाग वधलीला सम्बन्धित चित्र
10 सारथी कृष्णलीला सम्बन्धित चित्र

भगवतगीता आधारित कृष्ण के विराटरूप लीला, कंस वध[11] तथा ब्रजगलियों में माता यशोदा के साथ की जाने वाली बाललीला तथा कृष्ण और राधा की नृत्यलीला, ब्रह्मलीला, संयोग–वियोग लीला आदि का लालित्य युक्त चित्रण लघु चित्रों में किया गया है। ललित सौन्दर्य की महिमा से युक्त होने के कारण कृष्ण को ललित रूप में बनाया गया है। ब्रजवासी उनके और उनके अनुपम सौन्दर्य को देखकर मोहित और अचम्भित रूप में दर्शाये गये हैं।[12] अपने सखाओं के साथ बालगोपालों के साथ कृष्ण का माधुर्यपूर्ण व्यवहार भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया है। अधिकांश चित्रों में पर्वत हरे बाग–बगीचे, नृत्य करते हुए मोर तथा अलंकरणों की शोभा भी मन को मोहित करती है। ऋतुओं के अनुसार ललित सौन्दर्य सृष्टि करने के लिए प्राकृतिक वातावरण के चित्रण में भी बड़ी सजगता दिखायी गयी है। घनश्याम के अंकन में उनके शरीर के रंग कमल दल से चारू, चपल, लोचन, इन्दुबदन, मधुर मुस्कान, और त्रिभंग मुद्रा को मूलतः चित्रित करते समय विशिष्ट स्थान दिया गया।[13] कृष्ण के चित्रण को रमणीय और लालित्य युक्त बनाने के लिए सौन्दर्य के अधिकांश उपादानों को यथासम्भव चित्रित किया गया है। कृष्ण के सौन्दर्य में नैसर्गिक गुणों को उद्दात्ता के साथ समाहित किया गया है। राधा और कृष्ण का चित्रण में नख से लेकर शिख तक उत्कृष्ट उपमानों को ध्यान में रखकर किया गया है। सौन्दर्य चित्र की रेखाओं और योजनओं में क्लासिक तत्त्वों के साथ–साथ रोमांटिक तत्त्व का भी समन्वय किया गया है। लघुचित्रों को देखने पर वे भक्तिकाल के कृष्ण काव्य का बोध कराते है रमणीयता उन चित्रों में आवश्यक रूप से समाहित की गयी है। जहाँ छटा में छबीलापन उत्पन्न किया गया है। उनमें मन को मुग्ध करने वाला आकर्षण है। सहज रूप से उन चित्रों से उद्दात्त सौन्दर्य की सृष्टि हो जाती है। उनकी अपार छविमयता उनके सौन्दर्य और रस का संचार कर देती है। उनका रंगीला, रसीला छबीलापन जिस प्रकार भक्त कवियों ने अपने काव्यों में अंकित किया है, वैसा ही प्रयास चित्रकारों ने श्रीराधा–कृष्ण की चपलता को दर्शाने के लिए किया है। लघुचित्रों की चित्रावलियाँ जो कृष्ण और राधा के विशेष विषय को अपने में समाहित करती है तथा कृष्ण के जीवन से जुड़े रोमांचक प्रसंगों को चित्रित करती है।[14] वे अपभ्रंश राजस्थानी पहाड़ी, किसी भी शैली के विषय क्यों न हो उनमें औदात्य और रमणीयता समाहित है। उनके सौन्दर्य में गरिमा, विशालता लालित्य असाधारण गुणों के अंकन का ध्यान रखा गया है जो भक्ति काल के प्रमुख कवियों तथा सूरदास के 'सूरसागर' श्री कृष्णामृत, चतुर्भुजदास जी का 'पद संग्रह',[15] गोबिन्द स्वामी जी 'पदसंग्रह',[16] ध्रुवदास जी की 'बयालिस लीला'[17] मीराबाई जी 'पदावली',[18] भक्त कवि व्यास जी की 'वाणी' हरिवंश 'राधा–सुधा–निधि', नन्ददास जी की 'रूप–मंजरी', जयदेव जी कृत 'गीत–गोविन्द' आदि भक्तिकालीन ग्रथों को आधार बनाकर तथा भागवतपुराण श्रीमदभगवतगीता आदि कृष्ण आधारित

---

11 कंस वधलीला सम्बन्धित चित्र
12 सूरदास, सूरसागर पद संख्या 1583
13 सूरदास, सूरसागर पद संख्या 3645–3646
14 सूरदास, सूरसागर पद संख्या 3690–91
15 चतुर्भुजदास जी का 'पद संग्रह 254, 258, 272
16 गोबिन्द स्वामी पदसंग्रह 438
17 ध्रुवदास जी की 'बयालिस लीला (आनन्ददसा विनोद लीला) पृष्ठ सख्या 227
18 मीराबाई जी 'पदावली पद संख्या 11

दिव्य ग्रंथों से विषयों का चयन कर लघु चित्रकारों ने अपने चित्र में लालित्य और रमणीय गुणों से युक्त सौन्दर्य की सृष्टि की है। यह मनुष्य में निहित स्वाभाविक आकर्षण है कि वह सौन्दर्य के उपादानों को देखकर अह्लादित एवं आकर्षित होता है। कृष्ण तो अपार सौन्दर्य एवं आकर्षण की खान है। वे परम सौन्दर्य है इसलिए उनके प्रति आकर्षण एवं अह्लाद होना जन सामान्य में स्वाभाविक है। इसका व्यापक प्रभाव यह है कि व्यक्ति यदि किसी ललितकला गुणों से युक्त होता है तो वह अपनी सम्पूर्ण क्षमता और समर्पण उस व्यापकता को अभिव्यक्त करने में करता है। सत्य का पोषण यदि शिवम में होता है तो रंजन सुन्दरम् में। सुन्दरम् की खोज ही मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। मनुष्य सृष्टि सौन्दर्य के खंडित रूपों को देखकर पूर्णतः भाव विभोर नहीं हो पाता है। वह उस छटा में पूर्णतः को पकड़ने का प्रयास करता है। पूर्ण सौन्दर्य को पाने की चेष्टा प्रतीकात्मक साधना को जन्म देती है। प्रकृति एवं मानव के सुन्दरतम् रूप के द्वारा परम सौन्दर्य व्यक्त करने वाली प्रतिकात्मक शैली निराकार साधना है। जब उसे हम अवतारों में व्यक्त करते है तो वह साकार रूप ग्रहण कर लेती है। पूर्ण सौन्दर्य प्रकृति एवं मानव जगत के परम सौन्दर्य को प्रतीकों एवं अवतारों में अभिव्यक्ति करने की एक परम्परा है। निराकार साधना सभी के लिए स्पृहणीय नहीं होती है; क्योंकि उसकी कठिनता सामान्य के लिए बोधगम्य नहीं है। जबकि साकार साधना में अवतारवाद की अवधारणा रोचक कथाओं के माध्यम से जनमानस के सम्मुख आकर्षण की सृष्टि करता है। भगवान श्रीकृष्ण की कथा में रोचकता सर्वाधिक विस्तार से समाहित है। वे मुख्यताशील और शक्ति के अवतार नहीं थे बल्कि सौन्दर्य और आनंद से घनीभूत दिव्य पुरुष थे। सौन्दर्य के प्रति अदम्य संयोजन के कारण ही कृष्ण अवतार समस्त अवतारों में पूर्ण अवतार है, वे सोलह कलाओं से युक्त पूर्ण ब्रह्म हैं। वे भक्त के आस्था के केन्द्र भक्तों के अनुरंजन करने वाले असीम सौन्दर्य से युक्त परम पुरुष है। उनका सौन्दर्य सीमाओं में आवद्ध नहीं है। इसलिए उनके चित्रण करने वाले चित्रकारों ने सभी विशिष्ट उपादानों को यथासम्भव समाहित किया है। परम तत्त्व के सौन्दर्य बोध, सौन्दर्य का आधार (आलम्बन) तथा भावक (आश्रय) दोनों ही पक्षों में उद्दात विशेषताओं से युक्त है। यहाँ कृष्ण चित्रों में निहित सौन्दर्य बोध को विश्लेषित करने का प्रयास किया जा रहा है।

रूपातीत का सौन्दर्य

राधा–कृष्ण के विशेष सौन्दर्य में चरम सौन्दर्य की उपासना की गयी है। स्त्री रूपों में जहाँ राधा जी का चित्रण सौन्दर्य की चरम अभिव्यक्ति रूप में की गयी है। वहीं श्रीकृष्ण को परमपुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। राधा अराधिका हैं तो कृष्ण आराधक है। दोनों ही रूपों में सौन्दर्य स्थिति का निदर्शन चित्रकारों ने किया है। उनके अमलान अप्रतिहत सौन्दर्य ससीम के सौन्दर्य का अतिक्रमण किये रहता है। जिससे मन अतिचेतना के लोक में विचरण करने लगता है। श्रीकृष्ण के जन्म से सम्बन्धित चित्रों में जिस सोभा सिन्धु का चित्रण किया गया है उसे शब्दों अभिव्यक्त कर पाना सम्भव नहीं हैं। श्रीराधा–कृष्ण के चित्रण में सौन्दर्य की गम्भीरता एवं व्यापकता दोनों पूर्णरूप से विद्यमान है और प्रत्येक चित्र को देखकर यह बोध होता है कि चित्रकार की जितनी क्षमता थी,

उसने उससे उस चित्र को अभिसिक्त करने का पूरा प्रयास किया है। तभी वह अलौकिक अनिवर्चनीय श्रीकृष्ण के छवि को चित्र पटल पर उकेरने में सफल रहा है। श्याम रुप की राशि है। शोभा सिन्धु के अगाध भण्डार है। जिसको चित्रित करने में चित्रकारों ने जो तन्मयता दिखायी है। उससे मन बारम्बार उसे देखने और उसमें उतरने की चेष्टा करता है। उनके श्यामल देह पर पीताम्बर का फहरना सौन्दर्य की रमणीयता और लालित्य के अपार लहरों को अपने में संजोये दिखायी देता है। उनकी भौंहे, त्रिभंगी मुद्रा, कर्ण कुण्डल, विशाल नेत्र, बाहुदण्ड, भुजंग, श्रीकृष्ण के मनोरम दृश्य उपस्थित करते हैं।[19]

श्रीकृष्ण के छवि सागर को देखकर मनुष्य मोहित ही नहीं होता है बल्कि आत्मविभोर हो जाता है। चित्रकारों ने हर सम्भव प्रयास किया है कि उनके जैसी सुन्दर छवि चित्रित की जा सके जो सभी को बरबस ही आकर्षित कर ले ऐसी छवियाँ राजस्थानी शैली और पहाड़ी शैली के कलाकारों ने चित्रित किया है। श्रीकृष्ण राधा के अंकन में अंग—अंग में अपार शोभा समाहित की गई है। उसकी कान्ति को देखकर आँखें जलमग्न हो जाती है। उनके सर्वांग सौन्दर्य को एक साथ देखा नहीं जा सकता है। जयदेव जी के 'गीत—गोबिन्द' पर आधारित जो श्रीराधा—कृष्ण के अतुलनीय प्रेम को प्रदर्शित करते चित्र बनाये गये हैं। वे रमणीय होने के साथ—साथ श्रृंगार रस की अनुपम छटा के उदाहरण है। गोपियों के साथ जहाँ कृष्ण को चित्रित किया गया है। वहाँ लावण्यता और उद्दत्ता का पूर्ण ध्यान रखा गया है। ये सभी चित्र न सिर्फ दर्शनीय हैं बल्कि मनोहारी होने के साथ—साथ चित्रकार के साधना पक्ष को दर्शाते है। नन्द—नन्दन श्यामसुन्दर की कान्ति को पीत बंसत, नील जलध पर बिजली जैसी चमक मुरली का सुंदर अंकन गले में पड़ी मालायें कृष्ण शोभा सिन्धु की अभिवृद्धि करती हैं। श्रीमद्महाभागवतपुराण पर आधारित चित्रों में रूपश्री के साथ—साथ भक्ति का अनुपम सौन्दर्य दिखायी देता है। उन चित्रों को देखकर मन विस्मृत सा हो जाता है। श्रीराधा के अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर अन्य चित्रों में अंकित होने वाले यक्ष किन्नर, नाग आदि देवी—देवता लत्तित हो जाएगें।[20] राधाजी के परम अद्भुत सौन्दर्य को चित्रित करने चित्रकारों ने अपने अन्तर में परम नारी का भाव रखा हैं और उसके लिए राधा को अंकित करने में जितने लावण्य की सृष्टि की जा सकी है। उतना उसने एक साधक के सामान प्रयास किया है। श्रीराधा—कृष्ण के नवमेंष शालिनी शोभा के अंकन में कामदेव के सौन्दर्य की जो उपमायें काव्यों में दी गयी थी और यह कहा गया था कि करोड़ों काम देवों की सुन्दरता उनके असीम सौन्दर्य के समक्ष फीकी है। यद्यपि चित्र में शब्दों के समान यह चित्रित कर पाना कठिन कार्य था परन्तु साधक चित्रकारों ने अपनी सम्पूर्ण क्षमता से नवोन्मेषशालिनी श्रीराधा—कृष्ण का अंकन किया है। मदनमोहन के मादन का अंकन करने में चित्रकारों ने मोहक रूपों की सृष्टि की हैं उनकी इक पल की छवि देखने पर मन ठहर सा जाता है और लालायित होकर उस अनूठी छवि का दर्शन करना चाहता है। असाधारण सौन्दर्य के धनी असीम सौन्दर्य से युक्त अवतारी कृष्ण

19 गोविन्द स्वामी पद संग्रह पद संख्या 438,445

20 हरिवंश जी, की 'हित चौरासी', पद संख्या 18

एवं राधा का चित्रण काव्य में चिर परिचित सौन्दर्य की रूप रेखाओं में किया गया है।[21] वह अत्यन्त अद्भुत है और भावोद्रेक करने वाला है। इससे रसाभिव्यक्ति की सृष्टि होती है। श्याम मुख को देखकर आँखें अपने को भूल जाती हैं। उनकी अद्भुत शोभा मन को विस्मृत कर देती है। उसके रमणीय दृश्य भावविभोर कर बरबस ही मन को रहस्यलोक की ओर ले जाता है। मोहन का चित्रण मन को मोहित करने वाला है। उनके चितवन में वशीकरण है। मोहनी शक्ति है जो व्यक्ति के हृदय को हर लेती है। यही कारण है कि श्रीराधा–कृष्ण का चित्रण मनोहारी औदात्य और रमणीय है। भक्त कवियों ने जिस प्रकार मोहन के मुखारबिन्दु पर कोटि–कोटि कामदेवों की सुन्दरता को न्योक्षावर किया है वहीं राधा जी के सौन्दर्य वर्णन में भी सौन्दर्य के सभी प्रतिमानों को अपूर्ण ही पाया है। कृष्ण जी के अलक, तिलक, कुण्डल, कपोल आदि का सौन्दर्य वर्णन करने में कवियों ने अपनी वाणी और चित्रकारों ने अपनी तूलिका को अक्षम पाया इसीलिए करोड़ों कामदेव की सुन्दरता को उन पर न्योक्षावर करके वह स्वस्ति लाभ प्राप्त करता है। ऐसा वर्णन श्री गोबिन्द स्वामी जी ने अपने पद संग्रह में किया है।[22]

21 जयदेव जी, के गीत–गोबिन्द’ पर आधारित श्रीकृष्ण के युगल रूप का चित्र
22 गोबिन्द स्वामी, ‘पद संग्रह’पद संख्या – 440